

10 MAY, 2019

ARE FARM LOAN WAIVERS A POLITICAL GIMMICK?**क्या कृषि ऋण माफी एक राजनैतिक हथकंडा है?****संदर्भ :-**

- कृषकों की ऋण माफी हेतु की जानी वाली घोषणाएं जिनका तात्कालिक लाभ तो हो सकता है परन्तु उनकी समस्याओं का यह कोई दीर्घकालिक समाधान नहीं है। कृषि संकट से निपटने हेतु सरकारों के लिए ऋण माफी एक पसंदीदा उपाय बनता जा रहा है।
- कृषि उत्पादकता बढ़ने के बावजूद आज के दौर में कृषि संकट एक वास्तविक समस्या है। क्योंकि कृषि उत्पादन बढ़ने के बावजूद किसानों की आय कम हुई है एवं उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण लेना पड़ता है। कृषि क्षेत्र की विकास दर पहले की अवधि की तुलना में कम हुई है। छोटे और सीमांत किसानों के लिए अतिरिक्त समस्या यह है कि भूमि जोत का आकार घटा है। पहले यह दो हेक्टेयर था परन्तु अब घटकर एक हेक्टेयर रह गया है।
- इन छोटे आकार के साथ, आय को बनाए रखना मुश्किल है। हालिया तनाव इसलिए है क्योंकि बाजार में कीमतें न्यूनतम समर्थन मूल्य से बहुत कम है, जबकि कृषि में कम पूँजी निर्माण लंबी अवधि की समस्या है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि की वर्तमान स्थिति

- नाबार्ड के आकड़ों के अनुसार ग्रामीण आय का स्रोत 23% कृषि क्षेत्र से है और बाकि गैर-कृषि गतिविधियों से।
- समग्र रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था, कृषि के साथ-साथ गैर-कृषि, मांग की समस्या और कम आय का सामना कर रही है जिससे संकट पैदा हो गया है।
- किसानों को मिलने वाले ऋण में संस्थागत ऋण सिर्फ 64% है बाकि किसानों के लिए कर्ज का माध्यम गैर-संस्थागत स्रोत है। बड़े किसानों को संस्थागत ऋण का लाभ प्राप्त होता है। जबकि छोटे किसान साहुकारों या स्थानीय कर्जदारों से अधिक ब्याज दर पर कर्ज प्राप्त करते हैं।
- किसान कर्ज चुकाने के लिए चुनाव या राजनीतिक उद्धोषणा का इंतजार करने लग जा रहे हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि कोई न कोई राजनीतिक दल कृषि ऋण माफी की घोषणा कर सकता है।
- कुछ लोगों का तर्क होता है कि कॉर्पोरेट सेक्टर का कर्ज माफी 5 लाख करोड़ रुपया हो सकता है तो कृषि सेक्टर का क्यों नहीं, यह एक खतरनाक धारणा है।
- सरकारी अभिलेखों में बटाईदार किसानों का उल्लेख नहीं होने एवं भूस्वामित्व संबंधी दस्तावेज के अभाव में बटाईदारों को सूचीबद्ध किसान नहीं माना जाता, इसलिए कर्ज माफी या सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं का लाभ इन किसानों को प्राप्त नहीं हो पाता, जिसके कारण ऐसे किसान गैर-संस्थागत ऋण लेने को बाध्य होते हैं। बटाईदारों को किसान क्रेडिट कार्ड का लाभ भी नहीं मिल पाता है। ऐसे में किसान आत्महत्या करने को विवश होते हैं।

कृषकों की आय बढ़ाने के उपाय -

- किसानों को सीधा नकद हस्तांतरण एक उपाय के रूप में सामने आया है जिससे बिचौलियों की भूमिका एक हद तक समाप्त की जा सकती है जिससे किसानों को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा उपलब्ध कराने में मदद मिल सकती है।
- कृषि क्षेत्र के लिए उपभोक्ता - उन्मुख रूझान से निर्माता - उन्मुख रूझान की ओर जाना होगा, जिससे एक तरफ तो किसानों को अपनी फसल उत्पादन में समूचित लाभ प्राप्त हो सकेगा दूसरी तरफ फसल पैटर्न की विविधता भी बरकरार रखी जा सकती है।
- समर्थन मूल्य नीति केवल कुछ फसलों में मदद करती है जबकि इससे फसल पैटर्न बिगड़ता है, जो पैसा कर्ज

माफी और अन्य सब्सिडी पर उपयोग किया जा रहा है उसे इंफ्रास्ट्रक्चर, परिवहन और प्रसंस्करण में उपयोग किया जाए तो स्थिति अधिक सकारात्मक हो सकती है।

- कृषि बाजारों में स्थापित कुलीनतंत्र को हटाना महत्वपूर्ण है।
- वर्तमान सरकार किसानों की आय 2022 तक दुगुनी करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास कर रही है जिसमें मृदा हेल्थ कार्ड, नकद हस्तांतरण, कृषि बीमा इत्यादि शामिल हैं।
- परन्तु किसानों के आय बढ़ाने के लिए बुनियादी ढांचे, मूल्य श्रृंखलाओं, रसद प्रसंस्करण और भंडारण के क्षेत्र में काम करने के साथ ही एक सुसंगत आयात-निर्यात नीति की भी आवश्यकता है।

कृषि ऋण माफी जैसे उपायों का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव -

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने राज्यों के राजकोषीय घाटे में वृद्धि के खतरे को लेकर आगाह किया है। उसका कहना है कि कृषि कर्ज माफी, आय समर्थन योजना और बिजली वितरण कंपनियों से जुड़े उदय बांड के बोझ से राज्यों का घाटा बढ़ सकता है।
- भारतीय रिजर्व बैंक ने राजकोषीय स्थिति के हिसाब से इसे खराब कदम करार दिया है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि इससे वित्त पर दबाव बढ़ेगा और अंततः घाटा बढ़ेगा। राजस्व प्राप्ति के प्रतिशत के रूप में ब्याज भुगतान में कमी के बावजूद जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) के प्रतिशत के रूप में बकाया कर्ज बढ़ रहा है।
- कृषि ऋण माफी कर्ज चुकाने में सक्षम कृषकों के लिए नैतिक द्वंद भी उत्पन्न कर रहा है जिससे बैंकों को भविष्य में इस क्षेत्र को ऋण देने से सावधान कर सकता है।

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न- कृषि ऋण माफी किसानों की वास्तविक मदद के स्थान पर राजनैतिक हथकंडा अधिक है जिससे न केवल राज्यों की वित्तीय स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है बल्कि किसानों की समस्याओं का दीर्घकालिक समाधान भी नहीं हो पा रहा है। उपर्युक्त कथन की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

**10 MAY, 2019
ENDLESS WAR**

अंतहीन युद्ध

संदर्भ

- अमेरिका को तालिबान से शांतिवार्ता के दौरान अफगान सरकार की चिंताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। हाल ही में अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में वरिष्ठ राजनेताओं, वहाँ के कबीलों के सरदारों, धर्म गुरुओं से मिलकर बनी लोया जिर्गा की एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया।

भूमिका:-

- इस बैठक के आयोजन का उद्देश्य अफगानिस्तान में सरकारी सैनिकों एवं तालिबान के मध्य चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए मार्ग निकालना था।
- अफगानिस्तान के आमजन से लेकर नेता, विभिन्न कबीलों के सरदार, शासक वर्ग सभी 17 वर्षों से चल रहे इस संघर्ष को समाप्त करना चाहते हैं।
- 2 मई को समाप्त हुई इस चार दिवसीय बैठक में जिर्गा ने सरकार से तालिबान विद्रोहियों के साथ वार्ता हेतु अफगानी सांसदों सहित एक वार्ताकार दल के गठन की अनुशंसा की है। साथ ही इसने महिलाओं के अधिकारों की भी वकालत की है, क्योंकि तालिबान के बढ़ते दबदबे ने अफगानी महिलाओं की स्थिति को अत्यंत ही दयनीय बना दिया था।
- महिलाओं की स्थिति को लेकर हमेशा वहाँ के राजनीतिक वर्ग द्वारा आवाज उठाई जाती रही है। अफगानिस्तान

के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने कहा है कि उनकी सरकार इस सभा के प्रस्तावों का सम्मान करती है साथ में यह भी चाहती है कि संघर्ष विराम आपसी सहमति के द्वारा अमल में लाई जाए। तालिबान ने अपनी ओर से इस प्रस्ताव को मानने से इनकार कर दिया है और साथ ही उसने रमजान जैसे पवित्र महीने में भी आतंकी हमलों को जारी रखने की बात कही है। ऐसे में एक बात तो अटल सत्य है कि बिना तालिबान के भागीदारी के किसी भी प्रकार का संघर्ष विराम अफगानिस्तान में सफल सिद्ध नहीं हो सकता है।

- तालिबान आज भी अफगानिस्तान के आधे हिस्से को नियंत्रित करता है एवं साथ ही इसने यह भी दिखाया है कि वो जब चाहे, जहाँ चाहे हमला कर सकता है चाहे वो स्थान किसी किले जैसा सुरक्षित ही क्यों न हो? तालिबान महीनों से अमेरिका के साथ वार्ता में लगा हुआ परन्तु इस वार्ता के दौरान भी उसने अफगानिस्तान में अपने हमले को जारी रखा है।
- लोया जिर्गा के प्रस्ताव को खारिज कर तालिबान ने एक बार फिर से यह स्पष्ट कर दिया है कि वह काबुल की सरकार के साथ अभी जुड़ने को तैयार नहीं है। तालिबान की हठधर्मिता ने शांति की संभावनाओं को क्षीण कर दिया है।

अमेरिका और तालिबान के मध्य वार्ता के मुख्य मुद्दे :-

- तालिबान के प्रतिनिधियों एवं अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि 'जाल्मे खलीलजाद' के मध्य वार्ता मुख्य रूप से अफगानिस्तान से नाटो सैनिकों की वापसी पर केंद्रित है अमेरिका वापसी के बदले में यह चाहता है कि अफगानिस्तान भविष्य में अल-कायदा एवं इस्लामिक स्टेट जैसे अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी समूहों को अपने यहाँ सुरक्षित आश्रय नहीं देगा।
- अफगानिस्तान में शांति स्थापना हेतु वहाँ की सरकार और तालिबान को आपस में बातचीत करने की आवश्यकता है। किन्तु वहाँ जारी संघर्ष लंबे समय से शांति स्थापित करने की राह में अवरोध उत्पन्न कर रहा है। इस समस्या के समाधान को लेकर दोनों पक्ष अलग-अलग नजरिये को लेकर चल रहा है।
- सरकार शांतिवार्ता में तालिबान को भी शामिल करना चाहती है जिसे अफगानिस्तान की लोया जिर्गा ने स्वीकृति प्रदान की है। परन्तु अन्य किसी भी सफल विद्रोही समूह की तरह तालिबान भी संघर्ष को लम्बा खींचना चाहता है, इस उम्मीद के साथ कि इससे सरकार का मनोबल कमजोर हो सकता है एवं उसकी सैन्य क्षमता भी नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है। तालिबान को इस रणनीति से पीछे सिर्फ सैन्यबल के प्रयोग द्वारा या फिर दबाव के द्वारा ही लौटाया जा सकता है। अफगान सरकार के पास संसाधनों का भी अभाव है।
- पिछले 17 वर्षों से जारी संघर्ष इस बात की गवाही है कि तालिबान को सैन्य कारबाई द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता है। साथ ही तालिबान के शर्तों पर शांति स्थापित नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे अफगान समाज उन स्वतंत्रताओं को खो देगा जिसका आनंद वर्तमान में वो उठा रहे है। सरकार के संसाधनों की कमी को सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय सहायता से ही दूर किया जा सकता है। अमेरिका जो कि अब अफगानिस्तान से अपने सैनिकों की वापसी चाहता है तथा इस हेतु उसने तालिबान से वार्तालाप भी प्रारंभ कर दिया है, उसे तालिबान पर दबाव डालना चाहिए कि वो अफगान सरकार के साथ भी शांति प्रक्रिया में सम्मिलित हो जिससे एक खुशहाल अफगानिस्तान की स्थापना हो सके।
- अमेरिका को काबुल के हितों की अनदेखी किसी भी कीमत पर नहीं करनी चाहिए।

स्थिर और शांतिपूर्ण अफगानिस्तान भारत हेतु महत्वपूर्ण

- स्थिर और शांति अफगानिस्तान भारत के लिए अत्यंत ही महत्व रखता है। 2001 में जब अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार का पतन हुआ तब भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में सहयोग की नए सिरे से शुरुआत की।
- भारत ने अफगानिस्तान में अपने दूतवास का विस्तार किया। सूखे के समय गेहूँ उपलब्ध करायी, सलमा बांध संसद का निर्माण करवाया।
- यदि अफगानिस्तान में तालिबान जैसी हुकूमत वापस आती है तो भारत के लिए एक बड़ी मुश्किल बात हो

जाएगी। चरमपंथ के कारण ये पूरा क्षेत्र अस्थिर हो जाएगा अतः वहाँ पर अमन और शांति की स्थापना होना हमारे लिए जरूरी है।

- भारत का संपर्क मध्य एशिया से जोड़ने में भी अफगानिस्तान महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक संसाधनों से भी अफगानिस्तान समृद्ध है यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है। एशिया के चौराहे पर स्थिति होने के कारण भी अफगानिस्तान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण देश हो जाता है।

विशेष -

लोया जिर्गा :-

- लोया जिर्गा 'पश्तो' भाषा का शब्द है और इसका मतलब महापरिषद होता है। सैकड़ों साल पुरानी यह संस्था इस्लामी शूरा या सलाहकार परिषद जैसे सिद्धांत पर ही काम करती है। अब तक कबीलों के आपसी झगड़े सुलझाने, सामाजिक सुधारों पर विचार करने और नए संविधान को मंजूरी देने के लिए ही इसका इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसे देश के कामकाज में लोगों की भागीदारी का सबसे अच्छा तरीका माना जाता है।

मुख्य परीक्षा का प्रश्न

प्रश्न - स्थिर और शांतिपूर्ण अफगानिस्तान न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। इस कथन के संदर्भ में अमेरिका द्वारा तालिबान के साथ शांतिवार्ता में अफगानिस्तान एवं भारत की मुख्य चिंताओं को रेखांकित कीजिए।

